लोकतंत्र की आत्मा है - संवाद

हरियाणा संवाद

पाक्षिक 1-15 जून 2021 www.haryanasamvad.gov.in अंक-19

"आनंदित व्यक्ति सूर्य के समान होता है, जो दूसरों को भी प्रकाशित करता रहता है।"

: गौतम बुद्ध

ब्लैक फंगस के उपचार के लिए मेडिकल कालेज

3

पानीपत, हिसार व गुरुग्राम में कोविड अस्पताल

4

जीवन शैली में सुधार की दरकार

8

कोरोना पर भारी सामूहिक तैयारी

विशेष प्रतिनिधि

लोगों की जागरूकता व राज्य सरकार के अथक प्रयासों की बदौलत बहुत कम समय में हुए चिकित्सा के अभूतपूर्व इंतजाम कोरोना पर भारी साबित हुए हैं। कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या तेजी से कम हुई है। महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए प्रदेश में चौतरफा एहतियाती कदम उठाए गए। सरकारी तंत्र के साथ साथ गैर सरकारी संस्थाओं ने भी बढ़चढ़कर कोरोना पर अंकुश लगाने के लिए पसीना बहाया।

सरकारी व निजी स्वास्थ्य संस्थानों पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए हरियाणा सरकार ने टेस्ट-ट्रेक-ट्रीट का मजबूत एक्शन प्लान तैयार किया और 8000 मल्टीडिसिप्लीनरी टीम को घर-घर जाकर स्वास्थ्य जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी। प्रत्येक टीम को 500 घरों की जांच करने की जिम्मेदारी दी गई। इन टीमों को राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले चालीस लाख परिवारों की जांच का लक्ष्य दिया गया है। जिसके चलते हरियाणा सामान्य स्वास्थ्य जांच योजना के तहत 4848 टीमों ने स्वास्थ्य कर्मियों के साथ डोर टू डोर स्वास्थ्य जांच सर्वेक्षण करते हुए 20 मई तक राज्य के 4559 गांवों को कवर किया और 14,46,716 परिवारों के 64,68,183 सदस्यों की जांच की।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल के प्रयास से पानीपत व हिसार जिले में देश भर में अपनी तरह के यूनिक प्रोजेक्ट पर काम करते हुए लाइव आक्सीजन सपोर्ट युक्त 500-500 बेड क्षमता के दो अस्पताल मात्र 15 दिन में तैयार किए गए।

पुलिस को डायल 112 के लिए भेजी गई 440 इनोवा गाड़ियों (20-20 वाहन प्रति जिला) को कोरोना मरीजों के लिए एंबुलेंस सेवा में बदला गया। वहीं दूरदराज के अंचलों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए हरियाणा रोडवेज की 110 मिनी बसों व 25 सामान्य बसों को आक्सीजन सुविधा युक्त हॉस्पिटल ऑन व्हीलस में बदला गया। हरियाणा में पहली बार हुए इन अभिनव प्रयासों के जरिए बड़ी संख्या में कोरोना के मरीज रिकवर हो रहे हैं।

राज्य में इस समय मेडिकल कॉलेजों, सरकारी व निजी अस्पतालों में इस समय 15001 आक्सीजन बेड, 5410 वेंटीलेटर व आईसीयू बेड है। इसके अतिरिक्त राज्य के सभी 22 जिलों में 526 कोविड केयर सेंटर्स में 45 हजार 86 बेड, हल्के व मध्यम 281 कोविड अस्पतालों में 21 हजार 417 बेड उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त राज्य ने ग्राम स्तर तक स्वास्थ्य सेवाओं को विस्तार दिया है।

जहां बीमार-वहीं उपचार

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोविड प्रबंधन के लिए दिए गए मंत्र 'जहां बीमार-वहीं उपचार' पर काम करते हुए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में कोविड मरीजों के लिए ऑक्सीजन की सुविधा के साथ-साथ आवश्यक दवाएं, उपकरणों सहित अन्य संसाधनों में बढ़ोतरी की गई। साथ ही 1310 गांवों में चौपालों, पंचायत घरों व सरकारी स्कूलों आदि सार्वजनिक स्थलों पर विकास एवं पंचायत विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग ने मिलकर 18270 बेड क्षमतायुक्त 'विलेज आइसोलेशन सेंटर' स्थापित किए। जिनमें 1280 आइसोलेशन सेंटर्स में महिलाओं व पुरुषों के लिए अलग-अलग शौचालय का प्रबंध किया गया है। इन सेंटर्स पर थर्मामीटर, आक्सीमीटर, स्टीमर, बीपी चेक करने की मशीन, बेड व पंखे आदि का इंतजाम किया गया ताकि कोविड संक्रमित मरीज घर के निकट आइसोलेशन की सुविधा स्वास्थ्यकर्मियों की देख-रेख में उपलब्ध हो सके।

संजीवनी परियोजना

ग्रामीण क्षेत्रों के दूर-दराज के इलाकों में उचित स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए करनाल से 'संजीवनी परियोजना' की पायलट परियोजना का शुभारंभ किया गया है। परियोजना को राज्य के अन्य जिलों में भी लागू किया जाएगा।

परियोजना संक्रमित रोगियों के लिए तीन स्तरीय चिकित्सा बुनियादी ढांचा प्रदान करेगी। इसमें ग्राम स्तर और उप-केंद्र स्तर पर और हल्के रोगियों के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों पर आइसोलेशन वार्ड शामिल हैं। आक्सीजन की आवश्यकता मध्यम लक्षण वाले रोगियों के लिए जिला या उप-जिला स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र या फील्ड अस्पताल और गंभीर रोगियों के लिए आईसीयू सुविधाओं से लैस सिविल या निजी अस्पतालों में उत्कृष्ट चिकित्सा केंद्र होंगे।

संजीवनी परियोजना के तहत 200 मेडिकल इंटर्न विद्यार्थी कोविड मरीजों को फोन से सम्पर्क कर उनके स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी ले रहे हैं। गम्भीर लक्षणों वाले मरीजों की जांच करवाकर अस्पताल में दाखिल करवाया जा रहा है। घर-घर जांच के दौरान मिले कोविड मरीजों को होम केयर किट देने का प्रावधान भी किया गया है।

किसानों से आंदोलन खत्म करने का आग्रह

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने किसानों से आंदोलन समाप्त करने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि यह समय आंदोलन का नहीं है। यह मानवता पर आया सबसे बड़ा संकट है, यह समय इस संकट से पार पाने का है। इसके लिए हम सबको मिलकर लड़ना होगा। यह महामारी किसी व्यक्ति, शहर या किसी क्षेत्र विशेष की नहीं है यह लड़ाई सबके लिए चुनौती है। महामारी को परास्त करने के लिए हम सबको निरंतर प्रयास करने होंगे। किसानों चाहिए कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में कोरोना से जंग में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए राज्य सरकार का सहयोग करें।

लैब टेस्ट की दरें निर्धारित

कोविड-19 के संबंध में एचआरसीटी चेस्ट और अन्य लैब टेस्ट की दरों को निर्धारित किया गया है। एचआरसीटी चेस्ट के लिए 2100 रुपए, आईएल-6 के लिए 1,000 डी-डिमर के लिए 400 रुपए, एलडीएच के लिए 250 रुपए, सीआरपी के लिए 350 रुपए, प्रोकैल्सिटोनिन के लिए 1,500 रुपए और फेरिटिन के लिए 300 रुपए होंगे।

इन दरों में टेस्ट पर होने वाले सभी खर्च जैसे पीपीई, पैकिंग, दस्तावेज, रिपोर्टिंग और जीएसटी/कर (यदि कोई हो) शामिल हैं। हालांकि, होम कलेक्शन के मामले में, परिवहन, पीपीई किट और पैनपॉवर आदि के लिए किए गए खर्च को कवर करने के लिए उपरोक्त टेस्ट दर के अलावा, एक या एक से अधिक सैंपल लिए जाने के बावजूद, 200 रुपये प्रति घर वसूल करने की अनुमति होगी।

तय की गई दरें पीपीपी मोड के तहत स्वास्थ्य विभाग को सेवाएं प्रदान करने वाले सीटी स्केन केंद्रों पर लागू नहीं होंगी।

चुनौती से पार पाने का संकल्प

आपदा सामने है तो उससे दो-दो हाथ करने ही होंगे। इसके अलावा कोई अन्य विकल्प भी नहीं है। डर गए या कमजोर पड़ गए तो हार जाएंगे, इसलिए जरूरी है कि पूरे हौसले व शिद्दत के साथ यह जंग लड़ी जाए। प्रदेश सरकार यही कार्य कर रही है। ऐसा नहीं है कि केवल सरकारी तंत्र ही इस जंग में शरीक है, डाक्टर, पैरामेडिकल स्टाफ, सुरक्षा कर्मी व अन्य सामाजिक एजेंसियां भी कंधे से कंधा मिलाकर इस महामारी का डटकर मुकाबला कर रहे हैं। आम लोगों द्वारा भी गांव व शहरों में पूरी एहतियात बरती जा रही है।

कोरोना को पराजित करने के लिए राज्य सरकार के निर्देशन में अनेक सुरक्षा पंक्तियां तैनात की गई हैं जो अपने-अपने मोर्चे पर काम कर रही हैं। मुख्यमंत्री मनोहरलाल इस जंग में सबसे आगे वाली पंक्ति में पूरे हौसले के साथ काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री होने के नाते वे जिस समर्पित भावना से दिन-रात मेहनत कर रहे हैं वह अनुकरणीय है। उनकी कड़ी मेहनत व अथक प्रयास का ही परिणाम है कि पूरा सरकारी व गैर सरकारी तंत्र इस जंग में कोरोना के खिलाफ एकजुटता के साथ खड़ा हो गया है।

जान है तो जहान है। इस सोच के साथ प्रदेश के लोगों ने कोरोना से बचने व उसे पराजित करने को गंभीरता से लिया है। मास्क लगाना, शारीरिक दूरी बनाए रखना व अनावश्यक घर से बाहर न निकलने पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। राज्य सरकार की ओर से कोविड चिकित्सा के लिए जो इंतजामात किए गए है उनसे आम जनता को न केवल चिकित्सा मुहैया हुई है उससे सुरक्षा की भावना भी बनी है।

ग्रामीण क्षेत्र में अस्पताल, कोविड सेंटर व आइसोलेशन सेंटर बनाए गए हैं। दवाइयां, आक्सीमीटर, थर्मामीटर व अन्य आवश्यक यंत्र घर-घर जाकर संक्रमितों को उपलब्ध कराए गए हैं। आक्सीजन प्रचूर मात्रा में उपलब्ध कराई गई है। जांच व वैक्सीनेशन का कार्य युद्ध स्तर पर हो रहा है। स्वास्थ्य विभाग के दिशा निर्देशन में प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा लोगों को घर घर जाकर कोरोना से बचाव के लिए जागरूक किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री मनोहरलाल के नेतृत्व में चल रही इस पूरी कवायद के परिणाम सुखद आने लगे हैं। 17 मई के बाद से कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में काफी कमी रिकार्ड की गई है। यह कमी लगातार जारी है। उम्मीद लगाई जा रही है कि कोरोना पर बहुत जल्द नियंत्रण पा लिया जाएगा।

-मनोज प्रभाकर

संपादकीय

जुझारूपन जारी है

इस वर्ष अनेक ऐसे पर्व एवं समारोह थे जो औपचारिक रूप में व्यापक स्तर पर मनाए नहीं जा सके। राज्य स्तर पर गुरु तेग बहादुर जी के 400वें गुरु पर्व के समारोह यद्यपि वर्ष भर चलेंगे, लेकिन निर्धारित कार्यक्रम देरी से प्रारंभ हुए क्योंकि कोरोना से जूझने में पूरा प्रदेश लगा हुआ था।

महाकवि सूरदास की जयंती हर वर्ष फ़रीदाबाद (सीही ग्राम- वर्तमान सेक्टर-8) मे मनाई जाती है लेकिन इस बार कोरोना के कारण समारोह सम्भव नहीं हो पाया।

लेकिन संतोषप्रद बात यह है कि हम लोग पहले से कुछ बेहतर स्थिति में हैं। इसका श्रेय प्रदेश के नागरिकों, विशेष रूप से ग्रामीणों और 'कोरोना-वारियर्स' को जाता है, जो निरंतर जागरूकता की लौ जलाए हुए हैं।

युद्ध लम्बा है। शत्रु अदृश्य है। इलाज, बचाव, जागरुकता, इन सबका प्रबंधन करने में दिन-रात लगे हैं लाखों चिकित्सा कर्मी व स्वास्थ्य और सुरक्षाकर्मी। शिक्षा से कमोबेश पूरी तरह वंचित है एक पूरी पीढ़ी। ढेरों और भी मोर्चे हैं जिन पर जूझने का सिलसिला जारी है।

हमने युद्ध लड़े हैं, मगर सीमित अवधि के। चुनावी हंगामे किए हैं, मगर सीमित व तयशुदा अवधि के। आंदोलन चलाए हैं मगर हर आंदोलन की एक उम्र-सीमा रही है। लेकिन ये आपदा गत एक वर्ष से भी ज्यादा समय से जारी है। कब तक यूं ही जूझना होगा अभी तय नहीं है। इस जुझारू तेवर के बावजूद हमारे आसपास, निजी व सामाजिक क्षेत्रों में हादिसों का सिलसिला भी जारी है। अगर सामाजिक दूरी, वर्तमान महामारी से बचाव की शर्त न होती तो यकीनन हमारा लम्बा वक्त, श्मशानों व शोकसभाओं में ही बीतता।

प्रिंट मीडिया में अब कुछ सकारात्मकता आई है। सिर्फ़ हादिसे नहीं छपते। सकारात्मकता वाली घटनाएं और उनके अन्य स्थायी स्तम्भ भी चल रहे हैं। लगातार आप एक ही प्रकार की सामग्री परोसते रहेंगे तो ऊब तो होगी। महामारी, मानवीय धरातल में ढेरों सबक सिखा रही है।

ऐसी ही एक घटना दिल्ली के एक अस्पताल में घटी। आंखें नम कर देने वाली यह कहानी एक महिला डॉक्टर ने सुनाई, जिसने कोरोना से मरती एक मां के लिए बेटे को वीडियो कॉल पर 'तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई...' गाना गाते देखा।

डॉक्टर दीपशिखा घोष ने इस घटना को ट्विटर पर बयां किया, जिसकी वह गवाह बनीं। उन्होंने लिखा, 'आज अपनी शिफ्ट पूरी करने से ठीक पहले मैंने कोरोना के चलते अपनी आखिरी सांसें गिन रही एक महिला की उसके बेटे से वीडियो कॉल पर बात कराई। हम अस्पताल में अक्सर यह करते हैं ताकि किसी की आखिरी इच्छा पूरी की जा सके। महिला के बेटे ने मुझ से कुछ मिनट मांगे और वीडियो कॉल पर ही अपनी मरती मां के लिए एक गाना गाया। मां को खोने के डर से अंदर ही अंदर टूट चुका बेटा उसे दिल भरकर निहार रहा था। हिम्मत कर उसने गाया, 'तेरा मुझ से है पहले का नाता कोई...'।

डॉक्टर दीपशिखा ने लिखा, 'वह गाना गाते-गाते फूट-फूटकर रो पड़ा और मुझे 'थैंक्यू' बोलकर उसने फोन रख दिया। इसके बाद मैं और सभी लोग वहीं नम आंखों के साथ खड़े रहे। इस गाने का मतलब हम सभी के लिए पूरी तरह बदल गया है।' डॉक्टर की ट्विटर पोस्ट पर लगातार प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। लोग इस मां-बेटे से खुद से जुड़ा महसूस कर रहे हैं।

यहां जयपुर के कई बार भाजपा सांसद और विधायक रहे गिरधारी लाल भार्गव का जिक्र जरूरी लगता है। जब भार्गव विधायक से सांसद बने, तो उन्होंने जयपुर के श्मशानों में गंगा में प्रवाहित होने के इंतजार में बरसों से पड़ी हजारों अस्थियों को प्रवाहित करने का संकल्प किया और वह हर शनिवार की रात रोडवेज की बस में बैठकर एक बोरा अस्थियां हरिद्वार ले जाते। अगले दिन संस्कार और सम्मान के साथ उन्हें प्रवाहित कर देते। नतीजा, जब एक बार कांग्रेस ने उनके खिलाफ जयपुर के पूर्व महाराजा भवानी सिंह को उतार दिया, तब एक नारा चला, 'जिसका कोई न पूछे हाल, उसके संग गिरधारी लाल'। उस चुनाव का नतीजा यहां लिखने की जरूरत नहीं है।

- डा चंद्र त्रिखा

मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी बनने का अवसर

युवाओं की रचनात्मक सोच व कौशल को सरकारी तंत्र में प्रयोग करने के मकसद से हरियाणा सरकार ने मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी (सीएमजीजीए) कार्यक्रम शुरू किया है। कार्यक्रम की सफलता को देखते हुए राज्य सरकार ने इसे छठे वर्ष भी जारी रखने का एलान किया है। इसके लिए बैच 26 जुलाई, 2021 से शुरू होने जा रहा है। इसके लिए 21 मई 2021 से देशभर के युवाओं ने ऑनलाइन आवेदन शुरू कर दिया।

कार्यक्रम के तहत 25 चयनित उम्मीदवारों को हरियाणा के 22 जिलों में रखा जाएगा और वे सीधे उपायुक्त और प्रशासन के साथ मिलकर काम करेंगे ताकि सिस्टम को सुव्यवस्थित किया जा सके और उत्पादकता में वृद्धि और नागरिक सेवाओं के वितरण में वृद्धि के लिए मौजूदा संरचनाओं को सुधारने हेतु अभिनव समाधान किए जा सकें।

सरकार के साथ काम करने का मौका

नए बैच के इन सीएमजीजीए को जहां सरकार के साथ काम करने का प्रत्यक्ष अनुभव होगा, वहीं उनके व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए इस कार्यक्रम में एक संरचना निर्धारित की गई है। पिछले साल देश के 15 से अधिक राज्यों से कुल 2,600 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए थे। यह संख्या हर साल बढ़ती ही जा रही है।

डॉ. राकेश गुप्ता, निदेशक, सीएमजीजीए

26 जुलाई 2021 से शुरू होने वाले नए बैच को हरियाणा में शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, महिला सुरक्षा और सार्वजनिक सेवा वितरण के तहत नए और वर्तमान प्रमुख कार्यक्रमों पर काम करने का अवसर मिलेगा।

छठे बैच के लिए आवेदन प्रक्रिया 21 मई, 2021 से शुरू हो जाएगी, इसमें देश भर के युवा ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। साक्षात्कार भी जून में ऑनलाइन आयोजित किए जाएंगे और अंतिम रूप से चयनित उम्मीदवार 26 जुलाई, 2020 से काम शुरू कर देंगे। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक उम्मीदवार 9717031645 या 8287670035 पर कॉल कर सकते हैं या cmgga@ashoka.edu.in ई-मेल कर सकते हैं।

- संवाद ब्यूरो

सड़क निर्माण कार्यों ने पकड़ी 'रफ़्तार'

'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' के फेज-1 व फेज-2 के अंतर्गत आवंटित सारा कार्य पूरा कर लिया है। यही नहीं, इस योजना के तहत फेज-थ्री के थर्ड-बैच को सबसे पहले अप्रूवल मिल गई है, इससे पहले मार्च 2021 में इस योजना के फेज-टू को भी देश में सबसे पहले अप्रूवल मिला था।

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला जो 'हरियाणा ग्रामीण सड़क एवं आधारभूत विकास एजेंसी' के अध्यक्ष भी हैं, ने बताया कि हरियाणा राज्य ने केंद्र सरकार की 'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' के फेज-1 के अंतर्गत 426 सड़कों व फेज-2 के अंतर्गत 88 सड़कों व 18 पुलों का निर्माण पहले ही पूरा कर लिया है।

'प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना' के फेज-3 के बैच-2 के अंतर्गत 120 सड़कों को मंजूरी दी गई है जिन पर कुल 549.51 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इन सड़कों की कुल लंबाई 1,216.95 किलोमीटर है। इस योजना के तहत बनने वाली सड़कों में अंबाला की 9 सड़कें, भिवानी की 17 सड़कें, फरीदाबाद की 2 सड़कें, फतेहाबाद की 14 सड़कें, हिसार की 14 सड़कें, जींद की 3 सड़कें, कैथल जिला 7 सड़कें, कुरुक्षेत्र की 8 सड़कें, महेंद्रगढ़ की एक सड़क, पलवल की 12 सड़कें, पानीपत की 11 सड़कें, रोहतक की 4 सड़कें, सिरसा की 7 सड़कें, सोनीपत की 11 सड़कें शामिल हैं।

सलाहकार संपादक :	डा. चंद्र त्रिखा
सह संपादक :	मनोज प्रभाकर
संपादकीय टीम :	संगीता शर्मा, सुरेंद्र मलिक, मनोज चौहान
संपादन सहायक :	सुरेंद्र बांसल
चित्रांकन एवं डिज़ाइन :	गुरप्रीत सिंह
डिजिटल सपोर्ट :	विकास डांगी

स्वरोज़गार के लिए वित्तीय मदद

हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम ने चालू वित्त वर्ष के दौरान अप्रैल, 2021 तक विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 60 लाभार्थियों को 40.35 लाख रुपए की वित्तीय सहायता मुहैया करवाई है, जिसमें 3.16 लाख रुपए की सब्सिडी भी शामिल है।

निगम द्वारा दी जा रही सब्सिडी

- अनुसूचित जातियों से संबंधित लोगों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत ऋण मुहैया करवाया जाता है ताकि वे अपना कारोबार और स्व-रोजगार स्थापित कर सकें।
- इन श्रेणियों में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, व्यापार और कारोबार क्षेत्र तथा स्व-रोजगार क्षेत्र शामिल हैं।
- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की सहायता से लागू योजनाओं के तहत भी उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।
- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के अंतर्गत 33 लाभार्थियों को डेरी फार्मिंग, भेड़ पालन, सुअर पालन और झोटा-बुग्गी के लिए 16.85 लाख रुपए का ऋण उपलब्ध करवाया गया है। इनमें से 15.25 लाख रुपए बैंक ऋण और 1.60 लाख रुपए सब्सिडी के रूप में जारी किए गए हैं।
- व्यापार और कारोबार क्षेत्र के अंतर्गत 24 लाभार्थियों को 21.30 लाख रुपए की राशि मुहैया करवाई गई जिसमें से 17.81 लाख रुपए बैंक ऋण, 1.36 लाख रुपए सब्सिडी और 2.13 लाख रुपए मार्जिन मनी के रूप में जारी किए गए हैं।
- राष्ट्रीय अनुसूचित वित्त एवं विकास निगम की सहायता से लघु व्यवसाय योजना के तहत इस अवधि के दौरान दो लाभार्थियों को 1.20 लाख रुपए जारी किए गए। इसमें राष्ट्रीय अनुसूचित वित्त एवं विकास निगम का प्रत्यक्ष ऋण हिस्सा 90 हजार रुपए और हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम का प्रत्यक्ष हिस्सा 10,000 रुपए है।

नंबरदारों को भी 'आयुष्मान भारत योजना' के अंतर्गत कवर करने का निर्णय लिया है। नंबरदारों को स्मार्ट मोबाइल फोन भी दिए जाएंगे। मुख्य सचिव संजीव कौशल ने बताया कि वर्तमान में राज्य में 23,375 नंबरदारों के स्वीकृत पद हैं।

करनाल के साथ लगती उत्तर प्रदेश की सीमा पर सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार 39 पिलर लगाए जाएंगे। ये पिल्लर फरीदाबाद, पलवल, पानीपत, सोनीपत सीमावर्ती क्षेत्र में लगाए जाने हैं।

ब्लैक फंगस के उपचार के लिए मेडिकल कालेज

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कोविड-19 महामारी से सामने आए 'ब्लैक फंगस' पर कड़ा संज्ञान लिया है और पीजीआई रोहतक सहित राज्य के सभी चिकित्सा महाविद्यालयों को तुरंत इस बीमारी के इलाज के लिए अधिसूचित करने के निर्देश दिए हैं।

रोहतक, जींद, महेंद्रगढ़ व चरखी दादरी जिलों के 'ब्लैक फंगस' बीमारी से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए पंडित भगवत दयाल शर्मा स्नातकोत्तर चिकित्सा संस्थान रोहतक को अधिकृत किया गया है। इसी प्रकार, पलवल के हथीन उपमंडल, नूह तथा गुरुग्राम जिलों के लिए शहीद हसन खान मेवाती राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, नल्हड़, नूह को, सोनीपत व पानीपत जिलों के लिए भगत फूल सिंह राजकीय महिला चिकित्सा महाविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत को, हिसार, सिरसा, फतेहाबाद व भिवानी जिलों के लिए महाराजा अग्रसेन चिकित्सा महाविद्यालय, अग्रोहा, हिसार को, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र व यमुनानगर जिलों के लिए कल्पना चावला राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, करनाल को अधिकृत किया गया है।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, झज्जर को रेवाड़ी व झज्जर जिलों के लिए, आदेश चिकित्सा विज्ञान संस्थान, शाहबाद, कुरुक्षेत्र को अंबाला व कुरुक्षेत्र जिलों के लिए, महर्षि मार्कंडेश्वर मेडिकल साइंस एंड रिसर्च संस्थान, मुलाना, अंबाला को पंचकूला व अंबाला जिलों के लिए, ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, फरीदाबाद को फरीदाबाद जिले के लिए, अल-फलाह स्कूल ऑफ मेडिकल साइंस एंड रिसर्च, धौज टिकरी खेड़ा, फरीदाबाद को पलवल, नूह व फरीदाबाद जिलों के लिए, एसजीटी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, बुढ़ेड़ा, सुल्तानपुर, गुरुग्राम को रेवाड़ी, नूह व गुरुग्राम जिलों के लिए अधिकृत किया गया है जबकि पानीपत व सोनीपत जिलों के लिए खानपुर कलां के अलावा एन.सी.मेडिकल कॉलेज, इसराना को भी अधिकृत किया गया है।

- संवाद ब्यूरो

ब्लैक फंगस पर नियंत्रण के लिए पर्याप्त दवाएं

स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा कि सरकार ने ब्लैक फंगस पर नियंत्रण को लेकर राज्य के सभी मेडिकल कॉलेजों में 20-20 बेड के वार्ड तैयार किए हैं। इनमें विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा ब्लैक फंगस के मरीजों का इलाज किया जाएगा।

सभी जिला चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि यदि उनके पास कोई भी ब्लैक फंगस का मरीज उपचार के लिए आता है तो उसे तुरंत समीप के मेडिकल कॉलेज में रेफर कर दिया जाए। मेडिकल कॉलेजों में ब्लैक फंगस के इलाज के लिए तमाम सुविधाएं और विशेषज्ञ डॉक्टर्स मौजूद हैं।

श्री विज ने कहा कि हरियाणा सरकार के पास ब्लैक फंगस के इलाज को लेकर पर्याप्त मात्रा में दवाइयां मौजूद हैं। जल्द ही केंद्र सरकार भी विदेशों से टीके का आयात कर रही है, जिनमें से भी हरियाणा को कुछ टीके मिलेंगे। उन्होंने कहा कि हरियाणा के जिन प्राइवेट अस्पतालों में कोरोना मरीजों से निर्धारित शुल्क से ज्यादा वसूली की शिकायत मिलेगी तो उस पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

आयुष्मान योजना के तहत मुफ़्त इलाज

निजी अस्पतालों में कोविड-19 का इलाज करा रहे प्रदेश के बीपीएल मरीजों के इलाज का पूरा खर्च राज्य सरकार वहन करेगी। इससे पूर्व राज्य सरकार ने ऐसे मरीजों को 35,000 तक की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की थी।

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने कहा कि जो बीपीएल परिवार आयुष्मान भारत योजना में शामिल नहीं हैं, वे परिवार भी इस लाभ के पात्र होंगे। जिला उपायुक्त सुनिश्चित करें कि यह योजना जमीनी स्तर तक पहुंचे। मुख्यमंत्री ने उपायुक्तों को निर्देश दिए कि वे सभी रोगी जो इस लाभ के पात्र हैं, को प्राथमिकता के आधार पर सुविधा मुहैया कराई जाए।

श्रम विभाग ने स्वास्थ्य विभाग को भेजा मेडिकल स्टाफ

कोविड-19 के संक्रमण पर काबू पाने में मदद करने के लिए ईएसआई ने अपने मेडिकल एवं पैरा-मेडिकल स्टॉफ की सेवाएं स्वास्थ्य विभाग को देने का निर्णय लिया है। यह मेडिकल स्टॉफ पानीपत और हिसार में बन रहे 500-500 बेड के कोविड अस्पताल में कोरोना मरीजों के इलाज में सहायता करने के लिए आगामी आदेशों तक स्वास्थ्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर रहेगा।

रोजगार राज्य मंत्री श्री अनूप धानक ने बताया कि कोरोना महामारी पर नियंत्रण पाने के लिए राज्य सरकार के सभी विभाग आपस में तालमेल से कार्य कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों में स्वास्थ्य विभाग में मेडिकल व पैरा-मेडिकल स्टॉफ की काफी आवश्यकता है, क्योंकि कोरोना मरीजों के ईलाज के लिए उनकी जिम्मेदारी बढ़ गई है। ऐसे में श्रम विभाग ने अपने ईएसआई अस्पतालों में कार्यरत चिकित्सा अधिकारियों, औषधिकारक, लैब टेक्नीशियन, एमपीएचडब्ल्यू, एमपीएचएस आदि स्टॉफ को स्वास्थ्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर भेजने का निर्णय लिया है। इनमें 136 चिकित्सा अधिकारी, 88 औषधिकारक, 26 एमपीएचएस, 17लैब टेक्नीशियन तथा 40 एमपीएचडब्ल्यू शामिल हैं।

करीब 300 मेडिकल व पैरा-मेडिकल कर्मचारियों का स्टॉफ आगामी आदेशों तक स्वास्थ्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर सेवाएं देता रहेगा।

सेना के संचालन में छायंसा कोविड मेडिकल कॉलेज

फरीदाबाद के गांव छायंसा में श्री अटल बिहारी वाजपेयी कोविड-19 मेडिकल कॉलेज शुरू हो गया। वेस्टर्न कमांड के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह की अगुवाई में सेना द्वारा इस मेडिकल कॉलेज का संचालन शुरू कर दिया गया है। 100 ऑक्सीजन बेड के इस कोविड-19 अस्पताल में 65 बेड पुरुषों के लिए व 35 बेड महिलाओं के लिए आरक्षित रखे गए हैं। अस्पताल में 35 वेंटीलेटर बेड भी लगाए जा रहे हैं। अस्पताल के लिए ऑक्सीजन सिलेंडरों की व्यवस्था की गई है। यहां 24 घंटे एंबुलेंस सेवा और ऑक्सीजन की सुचारू व्यवस्था भी की गई है।

केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी कोविड-19 मेडिकल कॉलेज में जिला प्रशासन व सेना के सहयोग से बहुत अच्छी व्यवस्था की गई है। इसके अलावा, प्रशासन द्वारा फरीदाबाद जिले में कोरोना के मरीजों के इलाज की बेहतर व्यवस्था की जा रही है।

भारतीय सेना की वेस्टर्न कमांड के लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने कहा कि भारतीय सेना के चिकित्सकों का कोविड-19 के इलाज को लेकर अनुभव रहा है। उन्होंने कहा कि हम यहां लोगों को बेहतरीन चिकित्सा सुविधा देने का पूरा प्रयास करेंगे। उन्होंने बताया कि फिलहाल दस डॉक्टरों की टीम व नर्सिंग स्टाफ पूर्ण रूप से आर्मी का होगा और स्थानीय चिकित्सा विभाग का भी सहयोग लिया जाएगा।

- संवाद ब्यूरो

करनाल रिसोर्स लोकेटर मोबाइल ऐप लांच

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से करनाल में 100 ऑक्सीजन बेड के एक नए फिल्ड अस्पताल तथा असंध के दो अस्पतालों में 30 ऑक्सीजन बेड की सुविधा की शुरुआत की। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने करनाल जिला प्रशासन द्वारा तैयार किए गए करनाल रिसोर्स लोकेटर मोबाइल ऐप की भी शुरुआत की।

करनाल रिसोर्स लोकेटर मोबाइल ऐप पर अस्पताल, एंबुलेंस, मेडिकल स्टोर, प्लाज्मा डोनर, वैक्सनेशन सेंटर संबंधी सभी आवश्यक सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

गृहमंत्री श्री अनिल विज ने कहा कि सम्पति क्षति वसूली अधिनियम के लागू होने से किसी भी आंदोलन की आड़ में निजी अथवा सार्वजनिक सम्पति पर नुकसान पहुंचाने वाले असामाजिक तत्वों से उसकी भरपाई की जा सकेगी।

आक्सीजन सिलेंडर होम डिलीवरी के लिए पोर्टल www.oxygenhry.in पर पंजीकरण करवाकर कोई भी मरीज घर पर यह सुविधा प्राप्त कर सकता है।

पानीपत, हिसार व गुरुग्राम में कोविड अस्पताल

कोरोना आपदा से निपटने के लिए राज्य सरकार कोई कसर नहीं छोड़ रही है। रातों रात कोविड अस्पताल बनाए जा रहे हैं तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में आइसोलेशन सेंटर बनाए जा रहे हैं।

पानीपत रिफाइनरी के पास गांव बाल जाटान में गुरु तेग बहादुर संजीवनी कोविड अस्पताल की शुरुआत हो गई। अस्पताल में कोविड मरीजों का इलाज शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि पानीपत की रिफाइनरी के पास बाल जाटान गांव में बनाए गए इस कोविड अस्पताल का गुरु तेग बहादुर के नाम पर नाम इसलिए रखा गया क्योंकि गुरु तेग बहादुर जी ने समाज की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था। उन्हीं की प्रेरणा से हम सबको इस अदृश्य महामारी से एकजुट होकर लड़ाई लड़नी है।

हिसार में संजीवनी अस्पताल

हिसार में 500 बेड के कोविड केयर अस्पताल का लोकार्पण हुआ है। इसके लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति सीधे इंडस्ट्री से जुड़ी है। चौधरी देवीलाल संजीवनी अस्पताल के आरम्भ होने से न केवल हिसार बल्कि आसपास के कई अन्य जिलों के कोविड रोगियों को उपचार की सुविधा मिलेगी।

गुरुग्राम में अस्पताल व कोविड केयर सेंटर

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने गुरुग्राम में 100 बेड क्षमता का

वेदांता ग्रुप, गिव इंडिया और डॉक्टर्स फॉर यू एनजीओ के सहयोग से ताऊ देवी लाल स्टेडियम में बनाए अस्थाई फील्ड अस्पताल का उद्घाटन किया तथा सेक्टर-67 में एम्अएम, सीआईआई, इंडियन एयरफोर्स के सहयोग से बनाए गए 300 बेड क्षमता के कोविड केयर सेंटर का भी उद्घाटन किया।

गुरुग्राम के सेक्टर-14 स्थित राजकीय महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में हीरो ग्रुप द्वारा बनाए गए 100 बेड के कोविड केयर सेंटर की विधिवत शुरुआत हो गई है। इस सुविधा को मिलाकर मुख्यमंत्री द्वारा गुरुग्राम में कोविड मरीजों के लिए 500 बेड के केयर सेंटरों का शुभारंभ किया गया है।

-संवाद ब्यूरो

मरीजों के लिए मनोवैज्ञानिकों की ड्यूटी

राज्य सरकार ने कोरोना महामारी के कारण तनावग्रस्त होने वाले लोगों को मानसिक रूप से संबल देने के लिए मनोवैज्ञानिकों की ड्यूटी लगाई है जिनसे पीड़ित व्यक्ति स्वास्थ्य विभाग की हैल्पलाइन के माध्यम से परामर्श ले सकते हैं।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए थे कोरोना महामारी से पीड़ित होने के कारण जिन लोगों में तनाव की समस्या हो जाती है, उनके तनाव को दूर करना आवश्यक है ताकि उनमें मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न न हों। स्वास्थ्य विभाग ने राज्य कोविड हेल्पलाइन नंबर 1075 और 8558893111 में आईवीआर-6 जोड़ दिया है। यह हेल्पलाइन कॉल करने वाले एक पीड़ित व्यक्ति को एक मनोवैज्ञानिक से जोड़ती है, जो उन्हें जरूरत के अनुसार सलाह देता है। वर्तमान में ऐसे 12 मनोवैज्ञानिकों की ड्यूटी लगाई गई है जो सप्ताह के सातों दिन सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक अलग-अलग समय में उपलब्ध रहेंगे।

ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने में सहायक प्रोनिंग प्रक्रिया

कोविड-19 के मरीजों के लिए प्रोनिंग प्रक्रिया (पेट के बल लेटना) ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने में सहायक है। यदि आप कोविड के मरीज है और घर पर ही क्वारेंटाइन हैं तो इस प्रक्रिया से ऑक्सीजन के स्तर को सुधार सकते हैं।

प्रोनिंग मरीज शरीर की पॉजिसन को सुरक्षित तरीके से परिवर्तित करने की एक प्रक्रिया है, जिसमें पीठ के बल लेटा हुआ मरीज जमीन की तरफ मुंह करके पेट के बल लेटता है। चिकित्सा के क्षेत्र में प्रोनिंग शरीर की एक स्वीकृत अवस्था है, जो सांस लेने की प्रक्रिया को आरामदायक बनाती है और शरीर में ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाती है।

प्रोनिंग का महत्व

इससे वेंटिलेशन बढ़ता है, बलगन कोशिकाएं खुलकर आसानी से सांस लेती हैं। इसकी आवश्यकता केवल उसी स्थिति में होती है, जब मरीज को सांस लेने में तकलीफ महसूस हो रही हो और उसका एसपीओ-2 का स्तर 94 से नीचे चला गया हो। घर में • रेस्टिंग के दौरान तापमान, ब्लड शुगर जैसे अन्य लक्षणों के अलावा एसपीओ-2 को नियमित रूप से मोनिटर करना भी बेहद महत्वपूर्ण है।

कुछ परिस्थितियों में प्रोनिंग से बचें

गर्भावस्था, डीप वेनस थ्रोम्बोसिस (जिसका उपचार 48 घंटे के भीतर हुआ हो), हृदय संबंधी प्रमुख बीमारियों की स्थिति में, अस्थिर रीढ़, जांघ या कूल्हे की हड्डी फ्रैक्चर होने की स्थिति में तथा भोजन के बाद करीब एक घंटे तक प्रोनिंग न करें। प्रोनिंग को केवल तब तक जारी रखे, जब तक आप इसे आसानी से कर पा रहे है। अधिक जानकारी के लिए हेल्प लाइन नम्बर 1075 एवं 85588-93911 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रोनिंग के दौरान तकिया लगाने का सही तरीका

प्रोनिंग के लिए एक तकिया गर्दन के नीचे रखें। एक या दो तकिये छाती और जांघ के उपरी हिस्से के बीच रखें। दो तकिये पैर की पिंडलियों के नीचे रखें। सेल्फ प्रोनिंग के लिए 4 से 5 तकियों की जरूरत होती है। लेटने की स्थिति में नियमित रूप से बदलाव करते रहना चाहिए। किसी भी स्थिति पर 30 मिनट से ज्यादा का समय न लगाये। प्रथम स्थिति में 30 मिनट से दो घंटे तक पेट के बल लेटें, फिर 30 मिनट से 2 घंटे तक दाई तरफ करवट से लेटें, इसके उपरांत 30 मिनट से 2 घंटे तक शरीर के उपरी हिस्से को उपर उठायें और बैठ जायें, जिसके बाद 30 मिनट से 2 घंटे तक बाई तरफ करवट से लेटें तथा फिर से प्रथम स्थिति पर वापिस लौटें और पेट के बल लेटें।

2021 KHELO INDIA YOUTH GAMES PANCHKULA, HARYANA

'खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2021' दस दिन में ही पूरे करवा लिये जायेंगे। यह गेम्स 21 नवंबर से 30 नवंबर तक होंगे। यह आयोजन पंचकूला, अंबाला, शाहबाद तथा दिल्ली व चंडीगढ़ में किया जाएगा, 90 प्रतिशत खेल पंचकूला में आयोजित होंगे।

कोविशील्ड की दो खुराकों के बीच अंतर बेहतर परिणाम को देखते हुए 12 से 16 सप्ताह किया गया है। कोवैक्सीन की दो खुराकों के बीच का अंतर 4 सप्ताह है।

संक्रमण से बचने के लिए गांवों में ठीकरी पहरा

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। कोविड-19 मामलों में हो रही वृद्धि को देखते हुए हरियाणा सरकार ने गांवों में ठीकरी पहरा लगाने का निर्णय लिया है ताकि गांवों में लोगों के आवागमन पर कड़ी निगरानी रखी जा सके और कोरोना संक्रमण के प्रसार पर नियंत्रण पाया जा सके।

पिछले वर्ष भी राज्य सरकार ने ठीकरी पहरा प्रथा को लागू किया था, जो निश्चित रूप से वायरस के प्रसार को रोकने में एक प्रभावी कदम साबित हुआ था।

हिदायतों में कहा गया है कि पंजाब विलेज एंड स्माल टाउन एंड पेट्रोल एक्ट, 1918 के प्रावधानों के तहत जन सुरक्षा के लिए गांवों में पुरुषों द्वारा गश्त (ठीकरी पहरा) लगाने के बारे में आवश्यक आदेश जारी या लागू कर सकते हैं।

जांच के दौरान जिन लोगों में कोरोना के लक्षण दिखाई दें, उनको गांव में ही बनाए गए आइसोलेशन सेंटर में क्वारंटीन किया जा रहा है और वहीं पर उनका इलाज किया जा रहा है। आइसोलेशन सेंटर में मेडिकल, पैरा-मेडिकल, आशा वर्कर इत्यादि कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

मिनी बसें बनीं एंबुलेंस

ग्रामीण क्षेत्र में सीएचसी स्तर पर कोरोना के इलाज के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध की गई हैं। इसके लिए हर सीएचसी में पांच-दस बेड की व्यवस्था की जा रही है। हरियाणा रोडवेज की 110 मिनी बसों को एंबुलेंस में परिवर्तित किया गया है। हर जिला में पांच-पांच एंबुलेंस-बसों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। इसके अलावा हर जिले में एक-एक बड़ी एसी बस भी उपलब्ध रहेगी, जिसका आइसोलेशन-सेंटर की तरह प्रयोग किया सकेगा।

ऑक्सीजन-टैंक जल्द बनाएं: सीएम

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि मेडिकल कॉलेजों में ऑक्सीजन के भंडारण के लिए ऑक्सीजन-टैंक जल्द से जल्द बनाए जाएं। जिन जिलों में मेडिकल कालेज दूर हैं और ऑक्सीजन के लिए ऑक्सीजन-सिलेंडर पर निर्भरता है, वहां पर लिक्विड-मेडिकल ऑक्सीजन की व्यवस्था की जाए। उन्होंने हर जिला में पांच से दस नए वेंटिलेटर स्थापित करने के भी निर्देश दिए ताकि गंभीर मरीजों के इलाज में आसानी हो।

कोरोना संकट में मददगार पुलिस

हरियाणा पुलिस कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर में लोगों की बढ़-चढ़कर सहायता कर रही है। पुलिस की ओर से होम आइसोलेटिड कोरोना संक्रमितों को लगातार ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध करवाया जा रहा है।

पुलिस द्वारा यह कार्य सिविल प्रशासन के साथ मिलकर किया जा रहा है। oxygenhry.in पोर्टल पर आवेदन करने के बाद पुलिस की पीसीआर व अन्य वाहनों में जरूरतमंदों को तुरंत घर-घर ऑक्सीजन सिलेंडर पहुंचाए जा रहे हैं। पुलिस की 440 इनोवा गाड़ियां जरूरतमंद संक्रमित मरीजों को निशुल्क घर से अस्पताल और वापिस घर ले जाने के लिए सभी जिलों में दी गई हैं।

निजी अस्पतालों के लिए रेट निर्धारित

राज्य सरकार ने एनएबीएच व जेसीआई मान्यता प्राप्त अस्पतालों में आइसोलेशन बेड का 10,000 रुपए, बिना वेंटिलेटर के आईसीयू बेड का 15,000 रुपए तथा वेंटिलेटर युक्त आईसीयू बेड का 18,000 रुपए प्रतिदिन की दर से रेट तय किए हैं। इसी प्रकार बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में आइसोलेशन बेड का 8,000 रुपए, बिना वेंटिलेटर के आईसीयू बेड का 13,000 रुपए तथा वेंटिलेटर युक्त आईसीयू बेड का 15,000 रुपये प्रतिदिन की दर से रेट तय हैं।

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री-जन आरोग्य योजना के तहत इम्पैनल्ड अस्पतालों के लिए भी संशोधित दरें निर्धारित की गई हैं, जिसके तहत बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में सामान्य वार्ड के लिए 2,160 प्रतिदिन तथा एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों के लिए 2,400 रुपए प्रतिदिन निर्धारित किया गया है। बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में एचडीयू श्रेणी के वार्ड के लिए 3,240 रुपए तथा एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों के लिए 3,600 रुपए प्रतिदिन निर्धारित किया गया है। इसके अलावा, बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में बिना वेंटिलेटर के आईसीयू बेड के लिए 4,320 रुपए प्रतिदिन तथा एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों के लिए 4,800 रुपए प्रतिदिन निर्धारित किया गया है, जबकि बिना एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में वेंटिलेटर युक्त आईसीयू बेड के लिए 5,400 रुपए तथा एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पतालों में 6,000 रुपए प्रतिदिन निर्धारित किया गया है।

एंबुलेंस के रेट

एडवांस लाइफ स्पोर्ट एंबुलेंस के लिए 30 रुपए प्रति किलोमीटर, बेसिट लाइफ स्पोर्ट एंबुलेंस के लिए 15 रुपए प्रति किलोमीटर निर्धारित किया गया है। इसके अलावा, 10 किलोमीटर के स्थानीय क्षेत्र के लिए सिर्फ़ 500 रुपए किराया निर्धारित किया गया है।

मरीजों तक पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम

ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ रहे महामारी के प्रसार को रोकने के लिए राज्य सरकार ने गांवों में 'टेस्ट, ट्रैक एंड ट्रीट' रणनीति को अपनाते हुए 8,000 मल्टीडिसप्लेनरी टीमों का गठन किया है। ये टीमें गांवों में कोविड-19 जांच के लिए डोर-टू-डोर स्क्रीनिंग कर रही हैं। इनके अलावा आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए हैं जिससे संक्रमण के प्रसार को रोका जा सके।

- कोरोना संक्रमण का प्रसार रोकने के लिए प्रत्येक घर को कवर करते हुए डोर-टू-डोर स्क्रीनिंग कैंप आयोजित करने, स्क्रीनिंग कैंप के लिए विशेष मल्टीडिसप्लेनरी टीमों का गठन करने और धर्मशालाओं, सरकारी स्कूलों और आयुष केंद्रों को आईसोलेशन केंद्रों में तब्दील करने जैसी सक्रिय रणनीति बनाई गई है।
- गांवों को इस घातक संक्रमण से बचाना है, इसलिए संबंधित प्रत्येक अधिकारी हर गांव पर विशेष सतर्कता बरते जाना सुनिश्चित करे।
- ग्रामीणों के लिए एक विशेष जागरूकता-सह-परामर्श अभियान शुरू किया जाए। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों, आशा वर्कर्स और प्रत्येक गांव के पूर्व और वर्तमान जनप्रतिनिधियों को मिलकर लोगों को स्क्रीनिंग कैंप में जांच करवाने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।
- कोविड-19 प्रबंधन की तैयारियों जैसे टेस्टिंग सुविधा बढ़ाने एवं क्लनिकल मैनेजमेंट पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ विशेष तौर पर, ग्रामीण क्षेत्रों में जन-जागरूकता गतिविधियां प्राथमिकता के आधार पर आयोजित की जाएं।
- प्रदेशभर में ट्रेनी डॉक्टर के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग, आशा और आंगनवाड़ी वर्कर्स सहित लगभग 8,000 मल्टीडिसप्लनेरी टीमों का गठन किया जाए ताकि हर गांव में घर-घर जाकर स्वास्थ्य जांच हो सके।
- हर परिवार की जांच उनके ऑक्सीजन और तापमान के स्तर की रिकॉर्डिंग के साथ की जाए। यदि स्क्रीनिंग कैंप के दौरान यह पता चलता है कि किसी व्यक्ति में बुखार, सर्दी और खांसी जैसे लक्षण हैं, तो उस व्यक्ति को तुरंत होम आईसोलेशन में रहने की सलाह दी जाए।
- स्क्रीनिंग करते समय मल्टीडिसप्लनेरी टीमें यह सुनिश्चित करें कि जिन लोगों में हल्के और मध्यम लक्षण हैं, उन्हें तुरंत कोविड-19 के लिए निर्धारित दवाइयां दी जाएं।
- यह भी सुनिश्चित किया जाए कि गंभीर लक्षण वाले लोग आवश्यक उपचार के लिए तुरंत अस्पताल में भर्ती हों।
- चूंकि ग्रामीण इलाकों में वायरस का प्रसार हो रहा है, इसलिए प्रत्येक गांव में 'टेस्ट, ट्रैक एंड ट्रीट' रणनीति अपनाकर स्क्रीनिंग कैंप लगाए जाएं ताकि यदि किसी को भी कोविड-19 के लक्षण हो, तो जल्दी से जल्दी पकड़ में आ सकें और संक्रमण के प्रसार को रोका जा सके।
- इन कैंपों के माध्यम से अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि हरियाणा के लगभग 60 लाख परिवारों के प्रत्येक सदस्य को 'टेस्ट, ट्रैक एंड ट्रीट' किया जा सके।
- धर्मशालाओं एवं सरकारी स्कूलों को आईसोलेशन केंद्रों में परिवर्तित करने की संभावना का जल्द से जल्द पता लगाया जाए। अगर कोविड केयर केंद्रों और अस्पताल में मरीज बढ़ते हैं तो धर्मशालाओं, सरकारी स्कूलों, जहां कोविड-19 मरीजों के इलाज के लिए आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं, का उपयोग किया जा सकता है।

फोटो- पीजीआईएमएस रोहतक आयुष विंग के डा. जयभगवान, फार्मासिस्ट गौतम, अमन व अन्य कोरोना संक्रमित मरीजों के घर-घर जाकर किट प्रदान करते हुए ।

– संवाद ब्यूरो

दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम के उपभोक्ता बिजली आपूर्ति या बिजली बिलों जैसी शिकायतें टोल फ्री नंबर 1912 या ई-मेल 1912@dhbvn.org.in के माध्यम से दर्ज़ कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत हर चार महीने में किसान के खाते में 2,000 रुपए सीधे हस्तांतरित हो जाते हैं जिससे वह समय पर अपनी फसल के लिए खाद-बीज खरीद सकता है।

तरबूज की खेती से मालामाल

संगीता शर्मा

सिरसा के खाजा खेड़ा गांव के बलबीर सैनी इजरायल की एक कंपनी में काम करते थे, जिसके अंतर्गत उन्होंने हरियाणा के अलग-अलग गांवों में खेतों में सूक्ष्म सिंचाई के यंत्र लगाने जाना पड़ता था। इस दौरान उन्हें किसानों से मिलने व खेत-खलिहान के बारे में जानकारी हासिल करने का मौका मिला। वह खेती से हो रहे मुनाफ़े से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने नौकरी छोड़कर ठेके पर ज़मीन लेकर खेती करनी शुरू कर दी। वह फसल विविधिकरण को अहमियत देते हुए तरबूज़, मौसमी सब्जियों व फूलों की खेती करते हैं।

बलबीर ने बताया कि अलग-अलग गांवों में छह एकड़ ठेके पर ज़मीन लेकर तरबूज व अन्य सब्जियों हरी मिर्च, घीया, करेला, गोभी, आलू व धनिये की खेती करते हैं। सर्दियों में हाईब्रीड गेंदे के फूल की खेती करते हैं। उनके तरबूज की ख़ासियत है कि इसका वज़न तीन से पांच किलो का होता है और अधिक मिठास व रसीला होता है। इसे काटते समय पानी नहीं गिरता, बल्कि इसके टुकड़े आसानी से कट जाते हैं। उन्होंने बताया कि इस बार कुछ हिस्से में बाहर से पीला व अंदर से लाल किस्म का तरबूज भी उगाया है। उन्होंने बताया कि इस किस्म को लोग शौकिया तौर पर खरीदते हैं और इतना अधिक पसंद नहीं किया जाता। बलबीर ने बताया कि वह तरबूज के लिए सिरसा में बहुत प्रसिद्ध है और उनके उगाए तरबूज (मारिको-4016) की बहुत मांग है। इस बार अच्छी पैदावार होने की वजह से उनके खेतों से ही लोग तरबूज खरीदकर ले गए। दो एकड़ में 400 क्विंटल तरबूज की पैदावार हुई। खेतों से लोग 15 रुपए और मंडी में 20-25 रुपए प्रति किलो के हिसाब से बिके। एक एकड़ में 30,000 रुपए खर्चा व तीन लाख रुपए का मुनाफ़ा हुआ। 15 मई तक खेतों से सारा तरबूज बिक गया।

किसान करें डायरेक्ट मार्केटिंग

उनका कहना है कि किसान को फसल विविधिकरण को अपनाना चाहिए ताकि अधिक लाभ कमा सकें। फलों, सब्जियों व फूलों की खेती करनी चाहिए। उनका कहना है कि यदि किसान डायरेक्ट मार्केटिंग करें तो वह अधिक कमाई कर सकता है। वह होम डिलीवरी के माध्यम से ही अपने फलों व सब्जियों को बेचते हैं। उन्होंने बताया कि खेत में जैविक खाद व जैविक कीटनाशक का प्रयोग करते हैं और यदि किसी में कीटनाशक का प्रयोग करना पड़ता है तो उसमें हल्का कीटनाशक होता है। इससे स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

हाथों हाथ बिक रहा है उमेद का खरबूजा

भूमि का संरक्षण और पोषण दोनों जरूरी हैं। ये बात झज्जर मातनहेल गांव के किसान उमेद सिंह ने साबित की है। बंजर होने पर जिस ज़मीन को साईं ने बटाई पर लेना बंद कर दिया था उमेद सिंह ने उस ज़मीन पर जैविक पद्धति से खरबूजा उगा लिया।

उमेद सिंह के पास चार एकड़ भूमि है। लगातार धान-गेहूं की फसल लेने से ज़मीन की उर्वरा शक्ति ख़त्म सी हो गई थी। साझीदार ने भी ज़मीन को बटाई पर लेना बंद कर दिया। उन्होंने बताया कि ज़मीन बंजर हो गई थी। बीज का पैसा भी निकलना मुश्किल हो रहा था। किसान सत्यवान गोपाल के बताए अनुसार उन्होंने जैविक खेती शुरू कर दी। खेती में मुनाफा बढ़ता चला गया। खेत प्यारे लगने लगे।

सत्यावन वर्षीय उमेद सिंह ने डेढ़ एकड़ भूमि में मल्टी ' ाप लगाई है। जिसमें मुख्य फसल खरबूजा है। इसके अलावा घिया, तोरी, कद्दू और खीरा लगाया है। इनकी खेती ड्रिप और मल्चिंग तकनीक से की है। खेत में देसी गोबर की खाद डाली गई है।

उन्होंने बताया कि खरबूजे की नोनिया बेबी और तरबूज की जनता-मन किस्म लगाई है। यह किस्म मिठास में लाजवाब होती है। खरबूजा 40 रुपए प्रति किलो के भाव बिक रहा है। जिसे लोग बिना मोल-भाव किये खरीदते हैं। उन्होंने बताया कि सीजन में डेढ़ एकड़ भूमि से 150 क्विंटल खरबूजा निकलने की संभावना है। दूसरी ओर जैविक सब्जी घिया, तोरी, कद्दू और खीरा हाथों हाथ बिक जाता है।

उमेद सिंह ने बताया कि यदि उत्पाद अच्छा हो तो ग्राहक कहीं से भी खोज लेता है। सेल के लिए मंडी में जाने की जरूरत नहीं पड़ती। खेत के बाहर ही स्टॉल लगाया जाता है।

शहद बढ़ाता है प्रतिरोधक क्षमता

हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लंबे भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग नौ माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। इसलिए हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रांत है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, अंबाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मधुमक्खी पालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहाबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। वैश्विक कोरोना महामारी ने हमें मानव शरीर की प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाने की आवश्यकता का एहसास करा दिया है। प्राकृतिक शहद तथा अन्य माध्वी पदार्थ विशेषतः प्रोपोलिस और पराग मनुष्य की प्रतिरोधी क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने की क्षमता वाले खाद्य पदार्थ माने गए हैं।

फसल की पैदावार बढ़ाने में सहायक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि प्रदेश के छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोज़गार मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। मधुमक्खी परागकरण क्रिया द्वारा फसल की पैदावार व गुणवत्ता बढ़ाने में भी सहायक होती है। तिलहनी फसलों मुख्यतः राया व सरसों में अच्छी परागण ि या से पैदावार में 20-25 प्रतिशत बढ़ोतरी होती है। कई अन्य फसलें जैसे अरहर, बेल वाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली, अमरूद, नींबू, नाशपती आदि में मधुमक्खियों द्वारा पर परागण से पैदावार बढ़ती है।

मधुमक्खी पालन से शहद के अतिरिक्त भी अन्य पदार्थ जैसे मोम, प्रोपोलिस पराग, रायल जैली इत्यादि मिलते है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकता है। दुनियाभर में मधुमक्खी पालन ग्रामीण समुदायों के लिए कम लागत वाला व्यवसाय है तथा ग्रामीण विकास के साथ-साथ वानिकी, बागवानी, कृषि, पर्यावरण संरक्षण जैसे सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एफ.पी.ओ फूड प्रोसेसिंग कंपनियों को भेज रहे टमाटर

हरियाणा में बागवानी व सब्जी उत्पादक किसानों की आमदनी बढ़ाने के मकसद से राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई भावांतर भरपाई योजना किसानों को उनका लागत मूल्य दिलाने के लिहाज से काफी कारगर साबित हो रही है और एफ.पी.ओ. ने इस काम को और भी आसान कर दिया है।

गौरतलब है कि राज्य सरकार ने प्रदेश में 1000 से अधिक एफ.पी.ओ. बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इनमें से टमाटर की खेती से जुड़े कुछ एफ.पी.ओ. ने पिछले दो साल में किसानों की समृद्धि के सफर में अहम भूमिका निभाई है।

बागवानी विभाग के प्रवक्ता के मुताबिक हरियाणा में मई व जून के महीने टमाटर की फसल की बिक्री के लिहाज से बहुत ही संवेदनशील रहते हैं, क्योंकि इन महीनों में टमाटर की फसल पककर तैयार हो जाती है और मंडियों में बंपर आवक होने से फसल के दाम गिरने की पूरी सम्भावना बनी रहती है। कोविड काल में तो स्थिति और भी गंभीर हो गई है।

गत वर्ष इस स्थिति पर काबू पाने के लिए हरियाणा सरकार ने बागवानी विभाग तथा लघु कृषक कृषि व्यापार संघ हरियाणा के माध्यम से आसपास की फूड प्रोसेसिंग कम्पनियों व राज्य के एफ.पी.ओ. का समझौता करवा कर लगभग 1000 टन टमाटर की आपूर्ति करवाई थी। उन्होंने बताया कि जब मंडियों में टमाटर के दाम निर्धारित मूल्य से कम रहते हैं तो उस स्थिति में किसान को भाव के इस अन्तराल की राज्य सरकार की भावान्तर भरपाई योजना के तहत की जाती है।

प्रवक्ता ने बताया कि टमाटर की पैदावार को देखते हुए इस वर्ष भी राज्य के एफ.पी.ओज ने फूड प्रोसेसिंग कम्पनियों को टमाटर की आपूर्ति शुरू कर दी है। अब तक यमुनानगर जिले के 3 एफ.पी.ओ. नामतः मैसर्ज राधौर फार्म्स प्रोड्यूसर कम्पनी लि., मैसर्ज सढ़ौरा किसान प्रोड्यूसर कम्पनी लि. व मैसर्ज सिलौकला फार्म्स प्रोड्यूसर लि.द्वारा कंपनी को अब तक 450 टन से ज्यादा टमाटर की आपूर्ति की जा चुकी है। यह काम अकेले किसान के लिए अपने स्तर पर संभव नहीं है जबकि एफ.पी.ओ. के माध्यम से यह आसानी से किया जा सकता है।

इस बारे में यमुनानगर के तीनों एफ.पी.ओ के निदेशकों का कहना है कि अगर बागवानी विभाग तथा लघु कृषक कृषि व्यापार संघ हरियाणा का सहयोग उनके एफ.पी.ओ. को नहीं मिलता तो करोना काल में टमाटर की इतनी अधिक मात्रा में आपूर्ति करना संभव नहीं था।

- संवाद ब्यूरो

बागवानी विभाग के बढ़ते कदम

बागवानी विभाग के महानिदेशक डॉक्टर अर्जुन सिंह सैनी के अनुसार सरकार ने बागवानी को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021-22 में फल, सब्जी, मसाले, फूल व औषधीय फसलों को बढ़ावा देने के लिए 4 लाख 17 हजार हेक्टेयर में खेती करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उनके अनुसार इस बार फलों का क्षेत्र 71 हजार 4 सो 60 हेक्टेयर निर्धारित किया है। सब्जियों का क्षेत्र 3 लाख 37 हजार 302 हेक्टेयर किया गया है। मसालों के क्षेत्र में भी बढ़ोतरी की है। प्रदेश भर में 6,846 हेक्टेयर में खेती करने का प्रावधान किया है। उनके अनुसार फूलों का क्षेत्र उन्नीस सौ से बढ़ाकर 1977 हेक्टेयर किया गया है। औषधीय पौधों का क्षेत्रफल भी बढ़ाया गया है। प्रदेश भर में 268 हेक्टेयर में इस बार औषधीय पौधों की खेती होने का अनुमान है।

विभाग से मिली जानकारी के अनुसार इस बार किसानों को फलों के उत्पादन के लिए 12 लाख 31 हजार मीट्रिक टन, सब्जियों के लिए 58 लाख 69 हजार 236 मीट्रिक टन, मसालों के लिए 54 हजार 4 और फूलों की खेती के लिए एक करोड़ 39 लाख 72 हजार 3 सो 66 औषधीय पौधों की खेती के लिए 2 हजार 525 मीट्रिक टन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

गेहूं की सरकारी खरीद मई के मध्य तक कुल 85 लाख 30 हज़ार मीट्रिक टन की गई है। इतना ही नहीं इसकी एवज में किसानों के खाते में 16 हजार करोड़ रुपए का भुगतान भी कर दिया गया है।

सरसों का एमएसपी 4,650 रुपए प्रति क्विंटल है। सरकार को इस बार एमएसपी पर सरसों का एक भी दाना नहीं खरीदना पड़ा, क्योंकि किसानों को बाज़ार में 7,275 रुपए प्रति क्विंटल का भाव मिल गया।

आंतरिक संस्कृति से समृद्ध है बाहरी गांव

मनोज चौहान

कुरुक्षेत्र से पिहोवा मार्ग पर शहर से सटा गांव बाहरी आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं से समृद्ध है। गांव पुरातात्विक टीले पर स्थित है, अतः प्रचीनता की दृष्टि से भी यह विशेष महत्व रखता है। ग्रामीणों का भाई-चारा बेमिसाल है। गांव में 15 जातियों के लोग रहते है, बहुलता वाल्मीकि परिवारों की है। कहते है सन् 1925 के पहले से यह गांव आबाद है। शहर के ज्यादा नजदीक होने के कारण गांव को शायद बाहरी कहा जाने लगा। 60 प्रतिशत ग्रामीण सरकारी या प्राइवेट नौकरी करते हैं। 40 प्रतिशत खेती और अपना खुद का व्यवसाय चलाते हैं।

गांव शेख चिल्ली मकबरे के बिल्कुल पीछे की ओर पड़ता है। यदि हर्ष के टीले से गांव को देखा जाए, बहुत ही प्यारा और विहंगम दृश्य नजर आता है। श्री स्थाणेश्वर महादेव और नाभी कमल मंदिर गांव के समीप है। जो महाभारतकालीन है। ग्रामीणों की धर्म में गहरी आस्था है। गांव में शिव मंदिर है। जो ग्रामीणों द्वारा स्वतः प्रकट बताया जाता है। ग्रामीण रमेश सैनी ने बताया कि टीले की खुदाई के दौरान 1977 में, इस शिवलिंग की खोज हुई। खुदाई करते हुए जब इसका आधार नहीं मिला तो उसी स्थान पर ग्रामीणों ने मंदिर बना दिया। हर शिवरात्री पर मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगती है और ग्रामीणों के सहयोग से मंदिर कमेटी विशाल भंडारे का आयोजन करती है। भगवान कार्तिकेय का प्राचीन और महाभारतकालीन मंदिर भी गांव में स्थित है। ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि यहां से कुरुक्षेत्र की परिक्रमा शुरु होती थी। यहां एक प्राचीन सिद्ध पीठ अखाड़ा है। जिसे बाबा स्वर्ण नाथ का डेरा भी कहा जाता है। बाबा स्वर्ण नाथ बाबा थे, जिनकी मृत्यु पश्चात डेरे में उनकी समाधी बना दी गई। दो दशक पूर्व डेरे में हरियाणवी सांगों का आयोजन होता था।

बाहरी गांव में राजकीय माध्यमिक पाठशाला है। जिसमें गांव के अधिकांश बच्चे शिक्षा ग्रहण करते है। दो आंगनवाड़ी केंद्र है। जहां पर शिशुओं की देखभाल और मातृत्व को गर्भधारण पर डॉक्टरी परामर्श और अन्य सुविधाएं मिलती हैं।

आधुनिकता की बात करें तो गांव बाहरी में नए जमाने की सभी वस्तुएं उपलब्ध हो जाती हैं। राशन किरयाना से लेकर मोबाइल फोन की दूकानें यहां पर हैं। मौजूदा पंचायत को मिलाकर तीन बार पंचायत के चुनाव गांव में हुए हैं। सभी पंचायतों ने गांव में खूब विकास कार्य कराए हैं।

गांव की खुद की सौ एकड़ भूमि है। जो पंचायत की आमदनी का बड़ा साधन है। शाम को गांव की मुख्य सड़क दूधिया रोशनी से जगमगा जाती है। रोशनी होने से ग्रामीण सुबह-शाम सैर करते है। युवा दौड़ लगाते नजर आते हैं। निवर्तमान सरपंच दीदार सिंह ने बताया कि गांव की हर गली इंटरलॉकिंग टाईलों से बनाई गई है। अभी गांव की एक ही गली में सीवरेज है। आगे पूरे गांव में सीवरेज लाइन बिछाने की योजना है। पंचायत द्वारा सामुदायिक केंद्र बनाया गया है। जहां पर ग्राम वासी अपने पारिवारिक आयोजन करा सकते हैं। हर बिरादरी की चौपाल है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत कई गरीब परिवारों के पक्के घर बनवाए गए हैं। गांव में सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए हैं। ग्रामीण स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण में रहें, इसके लिए गांव में घर-घर से कूड़ा-कचरा उठाने के लिए गाड़ी लगी है।

सरस्वती नदी बहती है गांव से

सरस्वती नदी का जिक्र वेदों और पुराणों में आता है। सरस्वती को देवी रूप में पूजा जाता है। यह नदी गांव से होकर बहती है। जिसे सरकार द्वारा हाल ही में पक्का कराया गया है। हालंकि सरस्वती को विलुप्त बताया जाता है। किन्तु गांव में नदी के चिन्ह शेष है जिसमें निकासी का पानी बहता है। सरस्वती के किनारे ही गांव का स्वर्ग धाम है। देहांत के बाद मानव देह के फूल इसी सरस्वती में विसर्जित किए जाते है।

हरियाणवी आभूषणों का बदलता स्वरूप

आदि काल से ही मनुष्य पेड़ों की छाल व फूलों की मालाओं से हाथों, पैरों को सजाता आया है। जैसे - जैसे सभ्यताएं विकसित हुई मनुष्य ने अन्य धातुओं से भी आभूषणों का निर्माण आरम्भ किया। सिंधु घाटी सभ्यता में कांसा, तांबा, टेराकोटा आदि से बने आभूषण मनके व मालाएँ खुदाई में प्राप्त हुईं। इन वस्तुओं के अतिरिक्त शरीर को सजाने संवारने के लिए अनेक कलात्मक विधियों का उपयोग किया जाता रहा है। ग्रंथों में बारह आभूषण बताए गए हैं, नूपुर, किंकिण, बलम, अंगूठी, कंगन, अंगद, हार, कंठ श्री, बसेर, खूंट, शीशफूल। जो शरीर की शोभा बढ़ाए उसे आभूषण कहते हैं। प्राचीन काल से हरियाणा में स्त्री ,पुरुष दोनों ही आभूषण प्रेमी रहे हैं। पुराने दिनों में आभूषण परिवार की संपन्नता का परिचायक थे। महिलाएं पुरुषों के मुकाबले ज्यादा गहने पहनती थी। वे पैरों में पांच या सात गहने अवश्य पहना करती थी जैसे कड़ी, नेवरी, छैल कड़े, झांझण, ताती और पाती आदि। इसी तरह हाथों में भी छन, पछेली , कडुले पहने जाते थे।

हरियाणा के पारम्परिक आभूषणों के डिज़ाइन बड़े आकर्षक होते थे। सभी सुनार एक जेवरों की मूल बनावट एक रखकर उनकी सजावट में अन्तर करने में माहिर थे। अपने काम में सुनार इतनी ख्याति प्राप्त कर लेते थे कि अक्सर लोग आभूषण देखकर ही सुनार का नाम बता देते थे।हरियाणा में पाए जाने वाले आभूषण यहाँ के जन जीवन की समृद्धि और संस्कृति के धोतक हैं।

प्रचलित हाथ व बाजू के आभूषण

1. **अंगूठी-** हाथ की अंगुलिओं में सोने चांदी की अंगूठी या छल्ला पहनने का रिवाज रहा है। अलग - अलग अंगुलिओं में अलग - अलग धातुओं की अंगूठियां पहनना नाड़ी शास्त्र के अनुसार बहुत लाभदायक माना जाता रहा है।
2. **आरसी-** एक कहावत काफी प्रचलित रही है। हाथ कंगण को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या, यह सोने से बना और शीशा जड़ित आभूषण अंगूठे में पहनने का आभूषण होता था। इसे महिला व पुरुष दोनों पहनते थे।
3. **हथफूल-** हाथ के पृष्ठ भाग पर पहना जाता था इसका पिछला भाग कलाई में बांधा जाता था। शीशा जड़े होने के कारण इसे आरसी कहते थे। आजकल ये आभूषण लुप्त प्राप्त प्राय है।
4. **छन-** सीधे हाथ की कलाई में पहना जाने वाला यह चांदी का आकर्षक आभूषण होता है। पहनने के बाद इसको पेच से बंद किया जाता है। जीन्द, हिसार, भिवानी जिले में अधिक पहना जाता रहा है ।
5. **पच्छेली-** पच्छेली कड़ूले जैसी होती है। उसके ऊपर चोचंदार बीज लगे होते है जो पांव के पोंहचे में पहनी जाती है। युद्धों के दौर में कभी कभी महिलाएं इसे शस्त्र के रूप में अपनी रक्षा के लिए भी प्रयोग करती थीं । कई इलाकों में इसमें चांदी की चवन्नी भी जड़ देते थे। इसी में एक 'लपेटवाली पच्छेली' भी है।
6. **गजरा-** गजरे आकार में बड़े होते हैं। इसमें चने की दाल की आकृति के एक पंक्ति में तीन-तीन बीज जड़े होते हैं। यह पेंच द्वारा बन्द होता है। पंक्तिबद्ध होने के कारण ये बहुत आकर्षित लगते हैं।
7. **मट्ठी अथवा कांगनी-** एक ही आभूषण के नाम हैं। यह पौंहची जैसा ही होता है। इसके बीज चांदी की चैड़ी पतरी पर जड़े जाते हैं जबकि पौंहची धागे में पिरोयी जाती है।
8. **चूड़ी-** कलाई का सबसे प्रमुख आभूषण है जो सुहाग व सौभाग्य का प्रतीक है। सामान्य रूप से ये कांच की होती है। इसके ऊपर सुनहरी रंग का मीना लगाया जाता है जिसकी चमक से चूड़ी की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है। विवाह अवसर पर वर पक्ष की ओर से वधू के लिए जो आभूषण भेजे जाते हैं, उनमें चूड़ी होती है। एक हाथ में कम से कम दो तथा अधिक से अधिक दस चूड़िया पहनी जाती है । अहीरवाटी में लाख का चूड़ा दिया जाता है।

9. **पौंहची:** पौहचे पर पहने जाने वाला यह आभूषण चांदी व सोने का होता है। यह मोटी चैन में लॉकेटनुमा होता है।
10. **कड़े:** हाथ में पहनने का आभूषण है जो सोने और चांदी के बने होते हैं। इसमें नग व रंग बिरंगे मोती जड़ कर सुन्दर और आकर्षित बनाया जाता है।
11. **कड़ूला:** चांदी या सोने का कड़ा नुमा होता है। यह बीच में से पतला, गोल और किनारों तक आते - आते मोटा और डिजाईनदार होता जाता है। ऐसी मान्यता रही है कि कड़ूला पहनने से निमोनिया, टैटनेस, दमा, खांसी, दृष्टि, याददाशत , उच्च रक्त चाप, हिस्टीरिया, भय लगना, पेट की खराबी, नकसीरी व मानसिक संतुलन भी ठीक रखता है।
12. **गोप:** कोहनी से ऊपर बाजू पर लटकदार चांदी से निर्मित घुंगरियां युक्त आभूषण होता है। महिलाएं इसे पहन कर जब दूध बिलोती या चक्की पीसती , तब इसकी घुंघरियो की आवाज उसकी काम करने की रफ्तार स्वतः ही बता देती है ।
13. **टाड:** कोहनी से ऊपर बाजू में पहनने की तीन इचं से लेकर पांच छह इचं चौड़ी चांदी के मोटे पतरे की बनी होती है। जिसके दोनों किनारे से ऊपर की तरफ गोलाई में मुड़ी टाड होती है। यह आभूषण प्यास रोकने में मदद करता था तथा धूल-धुएं आदि में दम घुटने से रोकता था। बिश्नोई समाज की महिलाओआज भी इसे धारण करती हैं। 14 . टड्डा- यह चाँदी के मोटे सरिए से बना बाजू के आकार का कोहनी के ऊपर पहना जाता है। इस पर बारीक डिज़ाइन करके सुन्दर बनाया जाता है। इसे बरा, टड्डा या हथदंड भी कहते हैं।
16. **बाजणा:** यह बाजू पर पहना जाने वाला चांदी का आभूषण होता था। इसमें नौ डाण्डी लगी होती थीं । प्रत्येक डाण्डी में तीन-तीन घुंघरू यानी कुल सताईस घुंघरू होते थे। जब मां दूध बिलोती तब दूध बिलोने से उसकी बाजू में घुंगरू की मधुर आवाज निकलती तो गोदी में रोते बच्चे को नींद आ जाती थी। एक लोक गीत भी प्रचलित है:- मेरा नौ डाण्डी का बाजणा, मेरे सुसरे ने दिये घड़वाए, झनाझन बाज बाजणा।
17. **बजूदंड :** भुजदंड अर्थात् बाजू पर बजूदंड बांधा जाता है। इसकी अनेक आकृतियां होती हैं। कुछ स्थानों पर पांच रुपए या अठन्नियों को एक श्रृंखला में पिरो कर बांधते थे। बाजूबंद हाथ के ऊपरी भाग में बांधा जाता है। कुछ स्थानों पर चांदी के चोकों का प्रयोग किया जाता है।

आज हरियाणवी संस्कृति की पहचान इन भव्य आभूषणों का प्रचलन कम हो चला है। थोड़े से रचनात्मक प्रयास से इन्हें पुनः प्रचलन में लाया जा सकता है ।

– सुरेंद्र बांसल

हरियाणा सरकार ने राज्य में ग्रामीण चौकीदारों को 12 प्रतिशत की दर से कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) का लाभ देने का निर्णय लिया है ।

शिक्षा मंत्री कंवरपाल ने प्रदेश कोविड-19 महामारी के मद्देनजर राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूलों में प्रिंसीपल और अध्यापकों की नियुक्ति प्रक्रिया को ऑनलाइन इंटरव्यू के माध्यम से जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए हैं।

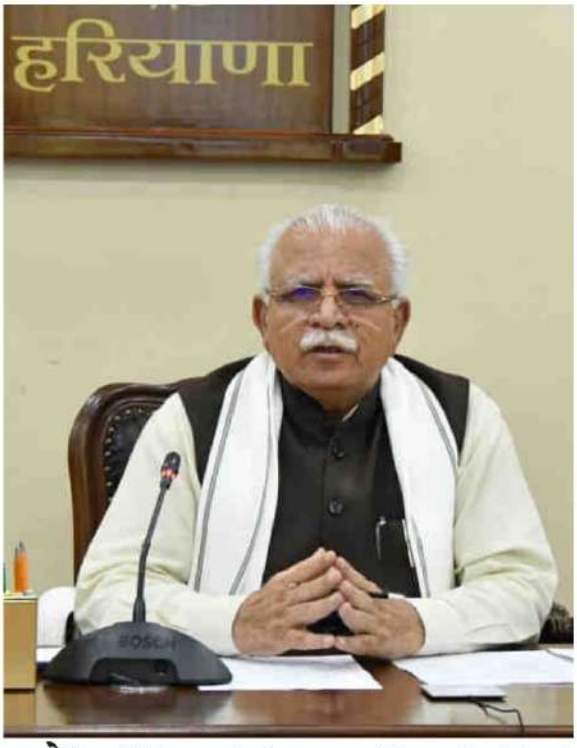

मरीज़ों का उपचार सरकार की प्राथमिकता

इलाज में गरीबी बाधक नहीं बन पाएगी: मनोहरलाल

कोविड मरीजों के उपचार के लिए विकसित किए जा रहे बुनियादी ढांचे के चलते कोरोना का खौफ कम हो रहा है। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने कहा कि मरीजों की ज़िंदगी अनमोल है, उनको इस संकट से निकालने के लिए राज्य सरकार निरंतर कार्य कर रही है। इलाज में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी।

जिन मरीज़ों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है उनके लिए कोविड-19 के इलाज को आयुष्मान भारत योजना से जोड़ा गया है। बी.पी.एल परिवारों के मरीजों के प्राईवेट अस्पतालों में इलाज का पूरा खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन करने का निर्णय लिया गया है। जो परिवार किसी कारण आयुष्मान भारत योजना में पंजीकृत न हो सके उनके लिए भी यह सुविधा रहेगी।

घर पर आइसोलेशन में भी उपचाराधीन बी.पी.एल. परिवारों के मरीजों के लिए प्रति मरीज 5,000 रुपए देने का निर्णय लिया गया है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के गरीब परिवारों को परिवार पहचान पत्र पोर्टल से जोड़ा गया है और उन्हें मिलने वाली सब प्रकार की आर्थिक सहायता उनके बैंक खातों में दी जा रही है। जिन परिवारों के बैंक खाते किसी कारण से परिवार पहचान पत्र पोर्टल पर सत्यापित नहीं हो पाए हैं, उन्हें उनके मोबाइल नम्बर पर आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए एस.एम.एस. संदेश भेजे जा रहे हैं।

प्राइवेट अस्पतालों को भी इलाज की जिम्मेदारी दी गई है। जानते हैं कि गरीब आदमी प्राइवेट अस्पताल का खर्च नहीं उठा सकता। इसलिए हमने उस खर्च को भी वहन करने का निर्णय लिया है। हमारा उद्देश्य हर हालत में हर मरीज की जिंदगी बचाना है, क्योंकि हर ज़िंदगी अनमोल है।

मृत्यु होने पर परिवार को मदद

गरीब परिवार में यदि कमाने वाले की मृत्यु हो जाती है तो उस परिवार को भूखों मरने की नौबत आ जाती है। मुख्यमंत्री ने इस त्रासदी को भी समझा और ऐसे परिवारों को सहारा देने के लिए निर्णय किया कि 1 मार्च, 2021 से 31 मई तक 18 से 50 वर्ष की आयु के व्यक्ति की कोविड से मृत्यु होने पर बी.पी.एल. परिवार को 2 लाख रुपये की राशि का एक्सग्रेशिया अनुदान दिया जाएगा।

सरकार ने अब तक 2593 ऐसे बीपीएल मरीज़ों की पहचान की है जो इस समय अवधि में उपचाराधीन थे। उनमें से 24 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। इनका सत्यापन स्वास्थ्य विभाग कर रहा है। अब तक 2 मृतकों के परिवारों को 2-2 लाख रुपये की राशि का एक्सग्रेशिया अनुदान दिया जा चुका है और अन्य को जल्द ही यह राशि मिल जाएगी।

मुख्यमंत्री ने 31 मई के बाद तो कोविड सहित किसी भी कारण से मृत्यु के मामले में 2 लाख रुपये का बीमा करवाने की योजना शुरू कर दी। इस योजना में बी.पी.एल. अथवा 1.80 लाख रुपये से कम वार्षिक आय वाले परिवार के 18 से 50 वर्ष की आयु के व्यक्तियों के पंजीकरण के लिए मुख्यमंत्री परिवार समृद्धि योजना का पोर्टल cm-psy.haryana.gov.in 15 मई से पुनः खोल दिया गया। पंजीकरण सीधे लाभार्थी द्वारा या सी.एस.सी / स्थानीय ऑपरेटर के माध्यम से ऑनलाइन किया जा सकता है। अब तक इस पोर्टल पर 2.38 लाख से अधिक परिवारों का पंजीकरण हो चुका है। इस योजना में गरीब परिवार को कोई बीमा प्रीमियम भी नहीं देना है, क्योंकि प्रति व्यक्ति 330 रुपये के बीमा प्रीमियम का भुगतान अथवा उसकी प्रतिपूर्ति सरकार द्वारा की जाएगी।

मरीज को प्रतिदिन 7 हजार तक की मदद

प्रदेश में आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों के कोविड-19 के उपचार के लिए 261 सूचीबद्ध अस्पताल हैं जिनमें 68 सरकारी तथा 193 प्राइवेट अस्पताल शामिल हैं। प्रदेश में 11,374 व्यक्तियों की कोविड-19 की जांच व उपचार पर लगभग 5 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई है। प्रदेश के किसी भी प्राइवेट अस्पताल में ऑक्सीजन या आई.सी.यू. बेड पर उपचाराधीन किसी भी हरियाणा निवासी कोरोना मरीज के इलाज के लिए प्रतिदिन प्रति मरीज 1,000 रुपये या अधिकतम 7,000 रुपए तक की राशि प्राइवेट अस्पताल को देने का प्रावधान किया गया है।

निःशुल्क राशन की व्यवस्था

गरीब परिवार को महामारी के दौर में अधिक तंगी न हो इसके लिए सरकार ने ए.ए.वाई., बी.पी.एल. और ओ.पी.एच. राशन कार्ड धारकों को वितरित की जा रही आवश्यक खाद्य वस्तुओं के अतिरिक्त मई व जून महीने में 5 किलोग्राम गेहूं प्रति सदस्य निःशुल्क उपलब्ध करवाने का निर्णय लिया है। इससे प्रदेश के लगभग 1 करोड़ 13 लाख लोगों को फायदा होगा।

जीवन शैली में सुधार की दरकार

कोरोना के कहर से अपूर्णीय क्षति हुई है। जहां जहां नुकसान हुआ है वहां चेहरों पर उदासी व स्तब्धता छाई है। निशब्द है लोग। कोई किसी को ढांढस बंधाने के लिए हौसला नही जुटा पा रहा है। क्या कहे, क्या न कहे। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा है। महामारी ने हज़ारों परिवारों की खुशियां छीन ली। अब वहां केवल मातम पसरा है। ऐसे में पीड़ित परिवारों के पास संभलने व एक दूसरे को दिलासा देने के लिए और कोई रास्ता भी नहीं है। घाव भरने में समय लगेगा। रात आई है तो दिन भी होगा। इन्हीं उम्मीदों के साथ जीवनपथ पर चलते रहना ही जाने वालों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कोरोना काल में एक खास पहलू जो कुछ कुछ समझ आ रहा है वह यह है कि अधिकांश नुकसान उन लोगों को हुआ है जो या तो पहले से किसी व्याधि से ग्रस्त थे या फिर जिनकी जीवन शैली प्राकृतिक जीवन के अनुकूल नहीं थी। अपवाद हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि किन्हीं कारणों से जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत नहीं थी वे इस महामारी की चपेट में आए। इनमें बहुत सारे युवा भी है।

शारीरिक श्रम न करना, खाने में फास्ट फूड को तरजीह देना, एयर कंडीशन घरों में रहना या फिर हमेशा घरों में कैद रहना, खेत खलिहानों की आक्सीजन या धूप न लेना, व्यायाम न करना, आलस भरा जीवन जीना आदि ये कुछ ऐसे कारण हैं जो शरीर को बेकार बना देते हैं। जब तक सोना आग में तपता नहीं है तब तक निखरता नहीं है। मानव देह के लिए स्थानानुसार वे सभी मौसम आवश्यक है जो प्रकृति ने दिए हैं। खानपान भी स्थानानुसार ही उचित बताए गए हैं। रहना कहीं का, खाना कहीं और का। इसे शरीर की प्रकृति के अनुकूल नहीं माना जाता। उसके सेवन से रोग न होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

आज की युवा पीढ़ी की जीवन शैली किसी से छुपी नहीं है। बहुत से युवा बाहर का खाना पसंद करते हैं व एसी में रहना चाहते हैं। मेहनत करने को सम्मान पर ठेस समझते हैं। माता पिता द्वारा टोका-टाकी भी उनकी सहनशीलता के दायरे में नहीं आती। बहुत से माता पिता यहां पर विवश हैं। वे चाहकर भी अपने बच्चों की जीवनशैली में सुधार नहीं ला पाते। इस प्रकार के हालात न केवल शहर के है बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में भी ऐसा ही चल रहा है। खेतों में जाकर काम करना तो दूर की बात वैसे टहलने के लिए भी बहुत कम युवा जाते है। सारा दिन मोबाइल में बीत जाता है। देर रात तक भी मोबाइल पर ही बीत जाता है। उन्हें अहसास भी नहीं होता कि शरीर में कोई रोग कब दस्तक दे गया।

-मनोज प्रभाकर

डॉ अमित अग्रवाल, भा.प्र.से. प्रबंध निदेशक, संवाद (सूचना जन संपर्क एवं भाषा विभाग) हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।
कार्यालय : संवाद सोसायटी एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़ फोन : 0172-2723814, 2723812 email : editorsamvad@gmail.com